P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-VII March-2015
E: ISSN NO.: 2349-980X

पर्यावरण शिक्षा एक वैष्विक परिदृश्य

सुषमा कमल
शोधार्थी
बी.एड. विभाग
जे.जे.टी. विश्वविद्यालय,
झुझनू, राजस्थान

विपिन सिंह
सहायक प्राध्यापक,
बी.एड. विभाग,
डी.एस.एन. कालेज,
उन्नाव

सारांश

वैष्विक परिदृश्य में पर्यावरणीय एक अनिवार्यता बन चुकी है। क्योंकि समाज में फैली हुई पर्यावरण प्रदूषण की समस्या सभी के लिये एक गम्भीरता का विषय है, जलवायु परिवर्तन के प्रमाण सभी जगह उपलब्ध है और ये परिवर्तन दृष्टिपात के"रूप में सामने आ रहें हैं। भारी हिमपात या भया वह समुद्री बाढ़ आपात स्थिति से निबटने की सरकारी तैयारियों के लिहाज से भी इस परिवर्तन से गहरे निहितार्थ हैं।

मुख्य शब्द : पर्यावरण ि"ाक्षा, प्रदूषण।

परिचय

औपचारिक पर्यावरण ि"ाक्षा वि"व स्तर पर सर्वप्रथम अगस्त 2000 से अन्तराष्ट्रोय विज्ञान व ि"ाक्षा कार्यक्रम में वि"व के अनेक दे"ाों के साथ–साथ भारत भी एक सदस्य दे"ा था। इस पर्यावरणीय ि"ाक्षा के कई उद्दे"य निर्धारित किये गये थे। पृथ्वी संताप में है और ताप लगातार बढ़ रहा है। ऋतु चक्र गड़बड़ा गयी है, सुनामी आ चुकी है, समुद्री चक्रवात से अमेरिकी न्यू आर्लिआंस ध्वस्त हो चुका है। अमेरिका मे सैकड़ो चक्रवात आये, फ्रांस में लू के थपेड़ों ने लोगों की जान ले ली, अबूधाबी में बर्फ बरस गयी, भारत म बद्रीनाथ में बादल फट गये, वि"व की सभी नदियों में पानी की मात्रा घट गयी। भारत की गंगा व यमुना जैसी बड़ी नदियां सूख रही हैं। यहां सूखा व बाढ़ तथा सुनामी का तांडव हो चुका है। संयुक्त राष्ट्र सहस्त्राब्दी पर्यावरण आंकलन 2005 के अनुसार पर्यावरण को प्राणवान रखने क घटक गड़बड़ा गये है। 12 प्रति"ात पक्षी, 25 प्रति"ात स्तनपाई तथा एक तिहाई मेढक नष्ट हो गये हैं। वर्ल्ड वाइल्ड की रिपोर्ट के अनुसार अंटाक्र टिका की 40 प्रति"ात बर्फ कम हो चुकी है, 65 प्रति"ात पेंगविन नष्ट हो चुके है। संयुक्त राष्ट्र अन्तराष्ट्रोय जलवायु परिवर्तन पैनल रिपोर्ट में इस भयावहता की बढत दिखाई गयी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार भीषण जलवायु परिवर्तन से डेढ़ लाख मौतें हुई है। तेरहवें संयुक्त राष्ट्र सम्मलन में इण्डोने"िाया के बाली द्वीप में 14 दिन तक गहन विचार किया गया, लेकिन नतीजा शून्य रहा। अन्तराष्ट्रोय जलवायु परिवर्तन पैनल की रिपोर्ट के अनुसार 1.4 डिग्री सेल्सिएस से 5.8 डिग्री सेल्सिएस तक बढ़ सकता है। सभी पदार्थ ताप से फैलते हैं। इससे समुद्र का जलस्तर 88–90 सेटीमीटर तक बढ़ेगा, तब गंगा व बह्मपुत्र की सन्धि पर स्थित सुन्दरवन जल में होगा। बांग्लादे"ा का बड़ा हिस्सा सुमद्र में, मिश्र व अमेरिका तमाम हिस्से जल में होंगे, आस्टलिया का ग्रेट बैरियर रीफ खतरे में हैं, औद्योगीकरण बाजारवाद और प्रकृति की स्वार्थी दोहन प्रलय ला रहा है। राजधानी दिल्ली के निकट यमुना नदी व कानपुर में गंगा नदी नाला बन चुकी है। कश्मीर की डल झील हर वर्ष एक हजार टन करकट पी रही है। सूखा व सुनामी भारत के लिये खतरे की घंटी है। भारत का लोकजीवन अस्वस्थ है, नई बीमारियां बढ़ी है। अनेक महानगरों की वायु आक्सीजन अनुपात सामान्य श्वसन के लिये नाकाफी है। वायु, जलध्वनि प्रदूषण बढ़ रहा है। जिससे दिमागी प्रदूषण व दिमागी असन्तुलन भी बढ़ा है। ग्रीन हाउस गैसो में कार्बन डाई आक्साइड, मीथेन, नाईटस आक्साइड और वाष्प मौजूद रहते हैं। ये गैसे खतरनाक स्तर से वातावरण म बढ़ती जा रही है। नतीजतन ओजोन परत के छेद का दायरा भी बढ़ता जा रहा है। अमूमन ठंडे इलाके भी गर्मी की मार से त्रस्त है। ग्लोबल वार्मिग का प्रमुख कारण जंगलो का कम होते जाना, पेटोलियम पदार्थों के धुये से होने वाला प्रदूषण तथा फ्रिज व एयर कंडी"ान आदि का बढ़ता चलन। अमेरिका का तक्र है कि विकसित बनने की होड़ में भारत और चीन जैसे देश पर्यावरण का अन्धाधुन्ध तरीके से नुकसान पहुॅचा रहे है।

सुझाव

भारत को अपने स्तर पर किये जा रहे प्रयासों में तेजी लानी होगी, उसे उद्योगों एवं रासायनिक इकाईयों से निकलने वाले कचरे को पुनः प्रयोग में लाने,

उपयोग में लाने लायक बनाने की कोशिश करनी होगी। पेड़ो की कटाई रोकनी होगी और वन संरक्षण पर भी बल देना होगा, साथ ही अक्षय उर्जा के उपायों पर भी ध्यान देना होगा। यानि कोयले से बनने वाली बिजली के स्थान पर पवन उर्जा अथवा सौर उर्जा पर ध्यान देना चाहिये ताकि हवा को गर्म करने वाली गैसों पर नियन्त्रण किया जा सके। जनमानस को वृक्षारोपण करना चाहिये।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. डी.प्रकाशम (1988) ''ए स्टडी ऑफ टीचर इफेक्टिवेशन एण्ड एफेक्शन ऑफ स्कूल आर्गेनाइजेशनल क्लाइमेंट एण्ड टीचिंग कम्पोटेन्सी,पील–एच.डी.एजूकेशन रविशंकर यूनिवर्सिटी।
2. Jaffrelot, Christophe (2005). Ambedkar and Untouchability: Fighting the Indian Caste System. New York: ColumbiaUniversity Press. p. 2. ISBN 0-231-13602-1.
3. S. Wang, Z. Su & S.P. Pevine (2001), National Occupational health service policies & programmes for workers in small scale industries in china AIHAJ 61 pp. 842-849
4. Jaffrelot, Christophe (2005). Ambedkar and Untouchability: Fighting the Indian Caste System. New York: ColumbiaUniversity Press. p. 2. ISBN 0-231-13602-1.
5. Jaffrelot, Christophe (2005) (in English). Dr Ambedkar and Untouchability: Analysing and Fighting Caste. London:\C. Hurst & Co. Publishers. p. 4. ISBN 1850654492.